CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपका भाग्यांक
अंगूठी, रत्न और रंग

: लेखक :

आचार्य अ. ल. भागवत

बी. कॉम्., सी. ए., आय. आय. बी.

: हिन्दी रूपान्तर :

श्री शान्तिभाई जोबनपुत्रा

श्री गजानन बुक डिपो प्रकाशन

भवानीशंकर रोड, कबूतरखाना, दादर, बम्बई ४०० ०२८ | भरत नाट्य मंदिर के सामने, १३१४, सदाशिव पेठ, पुणे–४११ ०३०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशक :
रमेश विठ्ठल रघुवंशी
श्री गजानन बुक डिपो प्रकाशन
भरत नाट्य मंदिर के सामने,
१३१४, सदाशिव पेठ, पुणे–४११ ०३०
और
भवानीशंकर रोड, कबूतरखाना,
दादर, बम्बई–४०० ०२८

□

© कॉपी राइट : प्रकाशकाधीन

□

प्रथम संस्करणं : फरवरी १९७६

□

मूल्य : रु. २=५०

□

मुद्रक :
क. ला. मुनोत,
प्रभात प्रिंटिंग वर्क्स
४२७ गुलटेकडी, पुणे–४११ ००९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस पुस्तक में पढ़िए...

अ. क्र.	विषय	पृष्ठ
१	भाग्यांक निकालने की नयी पद्धति और उसके अनुसार आपका जीवन	४
२	रत्नों के बारे में	९
३	ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से रत्न	१२
४	कौनसा रत्न, किसके लिए लाभकारी है ?	१५
५	रत्नों का उपयोग कब प्रारंभ करें ?	१९
६	रत्नों के संबंध में आवश्यक सावधानी	२२
७	रत्न के लाभालाभ की कसौटी	२३
८	जो रत्न खरीद नहीं सकते–उनके संबंध में	२७
९	रंग और आपका जीवन	२९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्री ॥

१. भाग्यांक निकालनेकी नयी पद्धति और उसके अनुसार आपका जीवन

सामान्यतया जन्मदिन, महीना और वर्ष इन सबका जोड लगाकर और उस जोडका भी कुल योग लगाकर भाग्यांक निकालनेकी सर्वसामान्य रीत है। परंतु, मेरा अनुभव यह है कि इस पद्धति से निकाला भाग्यांक सच्चा नहीं होता। भारतीय ज्योतिष शास्त्रका संकेत है कि गर्भसंभव काल की गणना करके भाग्यांक निकालें। जन्म तारीख में से ९ महीने व ७ दिन कम करनेपर शेष रहनेवाली जन्म तारीखपरसे भाग्यांक निकाला जाय तो उसके प्रत्यंतर ठीक निकलते हैं।

उदाहरण के तौरपर, एक 'क्ष' व्यक्ति की जन्म तारीख २३-११-१९२८ है। रूढ पद्धति के अनुसार उसका भाग्यांक ९ आता है। (२+३+१+१+१+९+२+८ = २७ व २+७ = ९) किन्तु इस विचारसरणी को, लेकर 'क्ष' की जन्म तारीख १६-२-१९२८ यही माननी चाहिए। (जन्म तारीख में से ९ महीने ७ दिन कम किये हैं।) इस जन्म तारीखपर से 'क्ष' का शुभांक २ आता है। पाठकों से निवेदन है कि इसका पूरा अनुभव लेकर ही अपना भाग्यांक तय करें। एकाध व्यक्ति के संबंध में, यह संभव है कि वह इस काल से पहले या बाद में पैदा हुआ हो। लेकिन ऐसे उदाहरण बहुत ही कम मिलते हैं। अतः सामान्यतया (ज्योतिशास्त्रानुसार) जन्म तारीख में से ९ महीने ७ दिन कम करके भाग्यांक निकालने का सुझाव दिया है।

अब हम यह देखें कि भाग्यांक और ग्रहोंका परस्पर संबंध क्या है :—

भाग्यांक १ : आपका भाग्यांक यदि १ है तो उस पर बुध ग्रह का प्रभाव है। बुध का ग्रह संपत्ति, व्यापार इत्यादि का कारक ग्रह है। इसलिए व्यापार की दृष्टि से १, १०, १९ व २८ तारीखें लाभकारक रहेंगी। जिनका

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभांक १ है ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान, व्यवहारकुशल और दूरदृष्टिवाले होते हैं। वे गंभीरता, सभ्यता और संस्कृति को चाहनेवाले होते हैं। स्त्रियों के साथ वार्तालाप करने में उन्हें बड़ा ही संकोच होता है और वे कुछ अस्वस्थ बन जाते हैं। जनवरी, इनका शुभ महीना है।

भाग्यांक २ : इस शुभांकपर रवि का प्रभाव है। २ शुभांकवाले व्यक्ति, अधिकतर राजनीति या अधिकारी वर्ग में मिलते हैं। भाग्य ही उनको बड़ा बनाता है। सामान्यत : उनकी मानहानि या अधोगति नहीं होती। उनका स्वभाव अहंकारी परंतु दयालू होता है। उनका जन्म सुबह के समय में होता है और उनका निधन साधारणतः अमावस्या के दिन होता है। पत्नीपर उनकी बड़ी धाक होती है। और उसी कारण से उनका पारिवारिक जीवन असंतुष्ट रहता है। उनकी शुभ तारीखें हैं– २, ११, २० व २९ और फरवरी, उनका शुभ महीना है।

भाग्यांक ३ : इस भाग्यांकपर शनि का प्रभाव है। इस भाग्यांक के लोग सांसारिक सुखोपभोग के पीछे लगे रहते हैं। सट्टा, जूआ इत्यादि अचानक होनेवाले धनलाभ की ओर उनका अधिक झुकाव तथा ध्यान रहता है, परिश्रम से धन कमाना ये पसंद नहीं करते। इन लोगों को काला रंग अधिक प्रिय होता है। ये लोग जितने शान्त स्वभाव के दिखाई देते हैं, क्रोधित होनेपर उतने ही बहक जाते हैं और किस सीमापर पहुंचेंगे कहना कठिन है। इस भाग्यांक के लोग व्यसनाधीन और स्त्री लम्पट होते हैं। शनिवार–इनका शुभवार है। तेलहन, तेल, खली, इत्यादि के व्यापार में इन्हें अच्छा लाभ होता है। ये लोग बड़े ही साहसी और अविचारी होते हैं। रात, इनके लिए शुभदायिनी है। ३, १२, २१ व ३० इनकी शुभ तारीखें हैं। मार्च, इनका शुभ महीना है।

भाग्यांक ४ : इस भाग्यांकवाले व्यक्तिपर गुरुका प्रभाव है। इस भाग्यांक के लोग बड़े शान्त और उदार स्वभाववाले होते हैं। चारित्र्य-शीलता और प्रतिष्ठा इनके उद्दिष्ट होते हैं। निर्धन होने पर भी, समाज में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा होती है। इनकी संसारयात्रा सुखद होती है। ये बड़े

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3-9-1957
3+3+4=7
3+4

संतोषी और ईश्वरभक्त होते हैं। पति-पत्नी का जीवन दीर्घायुषी होता है। इनकी संतानें सदाचारी और सुशिक्षित होती हैं। जिनकी जन्म-पत्रिका के दशमस्थान में उच्च राशिका रवि होता है वे महान कार्य करते हैं। उनको अपार कीर्ति प्राप्त होती है। किन्तु यह बात सच है कि उत्तरावस्था में उनका जीवन बड़ा ही कष्टपूर्ण होता है। इनकी शुभ तारीखें हैं—४, १३ और २२। अप्रैल, इनका शुभ महीना है।

भाग्यांक ५ : इस भाग्यांक पर मंगल ग्रह का प्रभाव है। इस भाग्यांक-वाले व्यक्ति, फौज, पुलिस या खेती के व्यवसाय में होते हैं। साहस इनका स्वभाव ही है। ये लोग बड़े सीधे-भोले और आदर रखनेवाले होते हैं। बलवान होने पर भी अपनी ओर ओछापन ले लेते हैं। जीवनभर में, इनके शरीर में कई जख्में होती ही रहती हैं। बीमार पड़ने पर, औषोधोपचार का कोई परिणाम इनपर नहीं होता। ये लोग कुदरती ही अच्छे हो जाते हैं। इनका जीवन, हमेशा भय-युक्त होता है . चोरों से डर बना रहता है। शरीर पर इजा होने की संभावना रहती है। इन लोगों पर निश्चित होकर भरोसा रख सकते हैं। ये कभी दगा नहीं देंगे। गँवारू स्वभाव, इनकी विशेषता है। ५, १४ और २३ इनकी शुभ तारीखें हैं। मई, इनका भाग्य-शाली महीना है।

भाग्यांक ६ : इस भाग्यांक पर शुक्र का प्रभाव है। इस भाग्यांकवाले व्यक्ति को सौंदर्यवान पत्नी या पति का लाभ होता है। इनमें पौरुष की कमी होती है। बहुतेरों को संतानप्राप्ति नहीं होती। इन लोगों को गाना-बजाना, नाटक खेलना इत्यादि में बड़ी दिलचस्पी होती है। अनैसर्गिक संभोग (Sodomy in Passive aspect) चाहनेवाले अनेक व्यक्ति इस भाग्यांक में मिलते हैं। अलबत्ता, ये लोग सौंदर्य के उपासक होते हैं। कवि, गायक, चित्रकार आदि कलाकार इस भाग्यांकवाले होते हैं। ६ भाग्यांकवाले व्यक्ति की जन्मपत्रिका में यदि तृतीय स्थानपर गुरु हो, तो उसको सर्वोत्तम संसार-सुख मिलता है। किन्तु शुक्र स्त्रीकारक ग्रह होने के कारण, ये लोग बड़े ही भावनाशील, द्वेषी और दूसरों का वैभव देखकर जलनेवाले होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनकी शुभ तारीखें हैं–६, १५, व २४। जून महीना, सामान्यतया इनके लिए शुभ रहता है।

भाग्यांक ७ : इस भाग्यांक पर नेपच्यून ग्रह का प्रभाव है। यह संन्यास-योग और धार्मिक मनोवृत्ति का ग्रह है। इस भाग्यांकवाले व्यक्ति, मान-सन्मान तथा सांसारिक बातों के बारे में उदासीन रहते हैं। ये लोग व्यापार-धंधा या अन्य किसी प्रकार का उद्योग-व्यवसाय नहीं करते। सामान्य नौकरी में ही उनका जीवन बीतता है। ये बड़े ही पारमार्थिक होते हैं। ये लोग बड़े चारित्र्यवान, संयमी और अबोलवृत्ति के होते हैं। ये किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते। निर्भयता, इनका सबसे बड़ा गुण है।

ये बड़े उग्र स्वभाव के होते हैं। परिवार के सदस्यों से उनकी बनती नहीं। उनके दिमाग में हमेशा गरमी रहती है। परंतु उनका क्रोध तात्कालिक होता है। जिनपर नेपच्यून का प्रभाव है, वैसे लोग कभी धनवान नहीं होते। फिर भी वे दरिद्रावस्था में भी कभी नहीं रहते। खर्च जितनी आय उन्हें हो ही जाती है। इनकी शुभ तारीखें हैं–७, १६ व २५। व्यय-स्थान में केतु होनेवाले इस भाग्यांक के व्यक्ति के लिए, संन्यास योग सम्भवनीय है। जुलाई, इनका शुभ महीना है।

भाग्यांक ८ : इस भाग्यांक पर चन्द्र का प्रभाव है। चन्द्र भाग्य-कारक ग्रह है। इस भाग्यांक वाले लोग सट्टा, रेस, जूआ इत्यादि में काफी धन प्राप्त करते हैं। परिश्रम करने ये कभी तैयार नहीं होते। ये स्वरूपवान-सुन्दर होते हैं। किन्तु इनका स्वास्थ्य बहुत नाजुक रहता है दवाइयों पर इनका पूरा भरोसा होता है। समाचारपत्रों में आनेवाले औषधियों के विज्ञापन, ये लोग बड़ी उत्सुकतापूर्वक देखते रहते हैं। इनको सुन्दर पत्नी या पति का लाभ होता है। किन्तु, कई बार ऐसा भी देखा गया है कि आचार-व्यवहार में ये लोग शंकास्पद होते हैं। इनका रहन-सहन बड़ा खर्चीला और विलासी होता है। जीवन के सभी सुख-वैभवों का अनुभव इन्हें हासिल होता है। इस भाग्यांक के व्यक्ति, सहजही में व्यसनी बन जाते हैं। नींद की गोलियाँ तो वे लेंगे ही। चन्द्र-प्रभाववाले व्यक्ति की आंखें खराब हुई होती हैं। उन्हें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विष-बाधा होने का डर रहता है। पानी से इन्हें सावधानी रखनी चाहिए। सर्दी, खांसी और सांस की व्याधि से ये लोग पीड़ित रहते हैं। हड़काये कुत्ते तथा अन्य विषैले प्राणियों से इन्हें खतरा हो सकता है। ८, १७ व २६ इनकी शुभ तारीखें हैं। अष्टम स्थान में वृषभ का चन्द्र होनेवाले इस भाग्यांकवाले व्यक्ति की दुर्घटना में मृत्यु होती है। अगस्त, इनका शुभ महीना है।

भाग्यांक ९ : इस भाग्यांक पर हर्षल ग्रह का प्रभाव है। इस भाग्यांक के व्यक्ति मैकेनिकल इंजिनीयर या वर्कशॉप में काम करनेवाले होते हैं। ये लोग शरीर से हृष्ट-पुष्ट होते हैं और उनकी शारीरिक सहनशीलता अनोखी होती है। ये लोग भूख को काबू में रख सकते हैं। इनका स्वभाव अत्यंत चंचल व अस्थिर होता है। इन्हें हमेशा, जीवन में नये-नये पहलुओंकी आकांक्षा रहती हैं। घरकी पुरानी चीजें फेंक देना और नयी खरीदना, घरकी सजावट बदलते रहना, इस प्रकारकी बातें, इनके जीवन में चलती ही रहती हैं। मित्रों के बारे में, इनकी निष्ठा नहीं के बराबर होती है। आजका मित्र, कल दुश्मन बन जाता है। अनेक व्यक्ति, परस्त्रीगमन करनेवाले दिखायी देते हैं। इनकी आय का भी कोई ठिकाना नहीं रहता। कुछ महीने भरपूर आय तो कुछ महीने बिल्कुल फाका, इस प्रकारका इनका जीवन होता है। इस भाग्यांकवाले व्यक्ति संशोधक, यंत्र-कला में निपुण तथा कई बार राजनीतिज्ञ भी होते हैं। इस भाग्याकवाले व्यक्तिपर भरोसा रखना मुश्किल है। आज जो कहेंगे वह बात या विचार, कल भी वही रहेगा, इसका विश्वास नहीं किया जा सकता। इन्हें पालतू जानवरोंपर बड़ी माया-ममता होती है। पारमार्थिक वृत्तिवाले लोग इस भाग्यांक में दिखायी नहीं देते। इनकी मृत्यु दुर्घटना में या बिना कष्ट के होती है। हृदयविकारवाले लोग इस भाग्यांक में अधिक प्रमाण में होते हैं। ९, १८ व २७ इनकी शुभ तारीखें हैं। सितम्बर, इनका शुभ महीना है। द्वितीय स्थान में बुध-चन्द्रवाले इस भाग्यांक के व्यक्तिको लॉटरी लगने का संभव रहता है।

* * *

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. रत्नों के बारे में

रत्न के विषय में मानव में भारी आकर्षण रहा है–यह बात सर्व-विदित है। स्त्री और रत्नों की प्राप्ति के हेतु बड़े-बड़े राज्यों में युद्ध हुए हैं और कई राज्य मिट भी गये हैं। इतिहास इस बातका साक्षी है। इस लेख में, हमें इतिहास की चर्चा नहीं करनी है, अपितु रत्नों के बारे में संपूर्ण जानकारी तथा कौन, किस रत्नका उपयोग कब करें, रत्न का उपयोग किसके लिए अनावश्यक है, इत्यादि बातोंका विवेचन ही यहाँ किया जा रहा है।

रत्न की क़ीमत, यद्यपि उसके वजन और आकार को ध्यान में रखकर आँकी जाती है, फिर भी मुख्यतः रत्न का मूल्य उसकी दुर्लभता और उसके विषय की भावना (Sentiment) पर अवलंबित रहता है। कोहिनूर, होप, ऑरफॉल जैसे रत्न, आकार में बड़े हैं ही, साथही उनके विषय में लोगों में जो विशेष भावना है, उसी के कारण उनकी कीमत करोडो रुपये गिनी जाती है। वास्तव में, इतनी भारी कीमत मिलनेपर भी, इन रत्नों को बेचनेवाला बिरला ही निकलेगा। निज़ाम के खज़ाने में करोडो रूपयों की कीमतवाले कई रत्न संगृहीत हैं। रणजीतसिंह के पास तो कोहिनूर हीरा, अनेक वर्षोंतक रहा। उसे रत्नों का बड़ा शौक था। अन्य किसी मूल्यवान वस्तु की अपेक्षा, यदि उसे एकाध सामान्य रत्न की भेंट मिलती तो उससे वह बहुत अधिक खुश हो जाता। प्राचीन काल में हमारे कई देव-देवताओं की मूर्तियों के पेटमें रत्नों का भंडार रहा करता था और मूर्तियोंकी आँखों के स्थानपर हीरे बिठाये जाते थे।

रत्नों के जितनीही प्लॅटिनम अति मूल्यवान तथा अधिक उपयोगी धातु है। फिर भी मनुष्य उसके प्रति उतना आकर्षित नहीं रहता। लाखो रुपये देकर कोई एकाध तोला प्लेटिनम खरीदने वाला शायदही होगा। मनुष्यको रत्नों के बारे में इतना आकर्षण क्यों है ? बड़े-बड़े करोडपति दुर्लभ रत्नों की खरीदके पीछे क्यों लगे रहते हैं ? एक-एक रत्न की कीमत लाखो रुपये होती है। इस रत्न का आकार सामान्य आँवले जितना बड़ा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है। इतनी छोटीसी चीज के लिए लाखों रूपयों का दाम चुकाया जाता है। इन रत्नों का क्या उपयोग है ? पाठकगण, ध्यानपूर्वक सुनिए। प्रत्येक सच्चे रत्न में नैसर्गिक संमोहन शक्ति छिपी रहती है। ऐसा रत्न देखतेही, खरीदनेवाला उससे प्रभावित हो उठता है। गरीव व्यक्ति भी यदि सच्चे रत्नको देखता है तो उसके प्रभाव से वह प्रसन्न व मोहित हो जाता है। यद्यपि, उसे खरीदनेकी ताकत उसमें भले ही न हो।

समुद्र-मंथन में अन्य वस्तुओं के साथ, कौस्तुभ-रत्न भी मिला था। इस घटनासे, यह स्पष्ट दिखाई देता है कि रत्न का स्थान कितना महत्त्व-पूर्ण है। चिन्तामणि याने प्रत्यक्ष कल्पतरु ही है। वह जिसके पास है, उसके सामने सर्व वैभव, श्री तथा सुख-शान्ति, हाथ जोडे खडे रहते हैं. ऐसी कल्पना है। जूठ या सच कुछ भी हो, यह वात तो सत्य ही है कि रत्न में कल्पतरु की कल्पना की गयी है।

ईश्वरीय संकल्प के अनुसार, रत्नों में अनेक प्रकारकी अतर्क्य शक्तियाँ दिखायी देती हैं। प्राचीन काल में, रोग हटाने के लिए लोग रत्नोंका उपयोग करते थे। विशेष प्रकार के रत्नको यदि रोगी के शरीरपर घुमाया जाय तो वह अच्छा होता है, ऐसी लोगोंकी श्रद्धा थी। कुछ किस्सों में, रत्नका चूर्ण भी, रोग निवारण के लिए, खाने दिया जाता था। किन्तु हीरक जैसे कुछ रत्न विषैले होनेसे, उनका उपयोग पेट में खाने के हेतु नहीं किया जाना चाहिए। प्राचीन समय में, राजवंश की स्त्रियाँ हीरक जडित अँगूठियाँ पहना करती थीं। अपनी आवरू बचाने के लिए, प्रसंगवश ये स्त्रियाँ उक्त अंगूठी में रखे हीरक को निगल जातीं और प्राणत्याग कर देतीं।

हीरक रत्न पेट में देना हानिकारक है, फिर भी, उसे कुछ समय के लिए पानीमें रखकर, वह पानी अगर रोगीको दिया जाय तो रोगी को अवश्य लाभ होता है। कुछ रत्नों का यह गुणधर्म ही है कि जहरीले पदार्थोंका विष, वे अपने में चूस लेते हैं। पुखराज रत्न, अनहद पसीना आना, पेटका गुल्म तथा आँखों के विकार—इत्यादि रोगों में वड़ा ही उप-योगी सावित हुआ है। इस रत्न का और एक गुणधर्म यह भी है कि उसका उपयोग करनेवाला मनुष्य वड़ा सात्त्विक और पवित्र आचरणोंवाला होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूत-बाधाओंसे मुक्ति पाने के लिए भी, कुछ लोग रत्नोंका उपयोग करते हैं। पिशाच्च बाधापर, गोमेद रत्न का प्रयोग किया जाता है। किन्तु पिशाच्च बाधाको हटाने, पुखराज रत्न ही अधिक प्रभावी सावित होता है, यह मेरा अनुभव है। घर में, यदि पिशाच्च बाधा हो तो पुखराज रत्नकी अँगूठी हाथ में लेकर उसमें जड़े रत्नपर नज़र रखकर, "**ॐ चैतन्य गोरक्ष-नाथाय नमः**" इस नाथपंथीय, अत्यंत प्रभावी मंत्र के एक हजार जप करें। किसी अन्य वस्तुकी अपेक्षा, रत्नों में मंत्र-सामर्थ्य अधिक प्रमाण में आकर्षित होता है—यह सिद्धांत है। यह प्रमाण लगभग सौ फीसदी ज्यादा होता है, ऐसा अनुमान है। अस्तु! आखिर में वह जप-युक्त अँगूठी पू घर में घुमा लेकर अपनी तर्जनी उंगली में पहन लें। इस से घर की पिशाच्चबाधा नष्ट हो जाएगी।

अब, रत्नों के संबंध में अत्यंत गुप्त और गुरुज्ञात साधना बताता हूँ। शनि का नगीना (रत्न), रातभर दूध में भिंगो रखिए। दूध बिना तपाया हुआ हो। गरम करके ठंढ़ा किया हुआ नहीं होना चाहिए। दूसरे दिन, उस अँगूठी को रेशमी रूमाल से पोंछ कर कोरी कर लें। अनंतर, आसनपर बैठकर उस रत्नपर स्थिर दृष्टि रखकर "इस रत्न की ओर देखने वाला कोई भी व्यक्ति, मुझे पूर्णतः वशमें हो।" इस प्रकार का संकल्प, कमसे कम १०८ बार मनही मन में करें। अब, आपका यह रत्न पूर्ण रूपसे संमोहित हो चुका है। इस अँगूठी को अनामिका (रविकी) उंगली में पहन कर, दृढ संकल्प और श्रद्धा के साथ, किसी भी व्यक्ति के पास चले जाइए। वह आपकी अँगूठी की ओर देख रहा है, ऐसा मालूम होनेपर, तुरंतही अपनी बात उससे कहें। जैसे कि पहले बताया जा चुका है, रत्न को देखते ही वह व्यक्ति क्षणिक संमोहित हो जाएगा। आपकी संकल्प-मिश्रित किरणें उसके अंतर्मन में प्रवेशित होंगी, क्योंकि वह संमोहित हो चुका है और उसका जागृत मन लुप्त हो गया है। ऐसी परिस्थिति में वह व्यक्ति, निश्चित ही आपका दास बनेगा। इस प्रयोग के लिए शनिका ही रत्न उप-योग में लानेका कारण यह है कि शनि, गूढ विद्या का कारक ग्रह है। दूसरी बात यह है कि नीला रंग सौम्य है और उसकी किरणें सुखद होती हैं। भ्रम की स्थिति में भी नीला रंग ही दिखायी देता है। आकाश का अपना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोई रंग नहीं है, किन्तु भ्रम के कारण वह नीला दिखाई देता है। दूरी से, पहाड भी नीले-से लगते हैं। संक्षेपमें, नीला रंग सारासार शक्ति नष्ट करके, हमारी बुद्धिमें भ्रम पैदा करता है। ऐसी स्थितिमें, सारासार विचार-शक्ति का नाश होकर, संबंधित व्यक्ति, अँगूठी के हमारे संकल्प के अनुसार बर्ताव करने की संभावना रहती है।

प्रिय पाठक, उपर्युक्त प्रयोग, किसी शुभ हेतु से ही करें। पापबुद्धिवश, स्त्रियोंको वशीभूत करने के उद्देश्य से, इस प्रयोग को करने का पागलपन न करें। हां, पति-पत्नी की अनबन मिटाने, गलत रास्ते पर जानेवाले बच्चों को सही मार्ग पर लाने और शत्रुओं को डराने या किसी सतानेवाले अधिकारी को; अपने लिए अनुकूल बनाने के लिए मोहनी डालने इस प्रयोग का सहारा लेने में कोई हर्ज नहीं है। * * *

३. ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से रत्न

अब, ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से रत्नों के संबंध में सोचेंगे। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियोंने, प्रत्येक ग्रह के लिए विशिष्ट रत्न की योजना निश्चित कर रखी है। यहां पर, केवल काल्पनिक विचार या मात्र गपें हांकने की बात नहीं है। हमारे ऋषि-मुनियों को, उनकी ध्यानावस्था में स्फुरित हुए ये विचार हैं। ध्यानावस्था में, मन तुर्यावस्थाधीन हो जाने से सर्वज्ञ बन जाता है। इस प्रकार से दिव्य मन में स्फुरित विचार सत्य ही होते हैं। अब हम, प्रत्येक ग्रह और उसके रत्न के संबंध की जानकारी देखें :–

ग्रह	रत्न	रंग
चंद्र	अछिद्र मोती	सफेद
मंगल	अंगारमणि	लाल (गूदेदार)
बुध	पन्ना	हरा (हरी घास जैसा)
गुरु	पुखराज	पीला
शुक्र	हीरा	सफेद
शनि	नीलमणि	नीला
रवि	माणिक	लाल (अनार के दाने के रंग जैसा)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राहू और केतु, ये ग्रह नहीं हैं, इसलिए इनका कोई रत्न नहीं है। ग्रन्थ में न दिये रत्न, केवल काल्पनिक मानें। हर्षेल व नेपच्यून के बारे में एक वाच्यता नहीं है और उस संबंध का कोई अनुभव भी नहीं है। इसलिए उस विषय में कोई विचार नहीं किया है। अब, प्रत्येक ग्रह के नैसर्गिक गुणधर्म को हमें देखना चाहिए :–

(१) **चंद्र** : यह मनका कारक ग्रह है और समुद्र पर (पानीपर) उसका प्रभाव है। समुद्र में सीपोंसे मोती बनते हैं। इसलिए चंद्र का रत्न मोती माना गया है। न्यूनगँड, ("दूसरों से हम कुछ कम हैं"–ऐसी वृत्ति) विस्मरण, पागलपन, सनकपन, मिरगी, इत्यादि रोगों पर मोती की अँगूठी पहननी चाहिए। चंद्र, तर्क। (Speculation), रेस, सट्टा, जूआ इत्यादि का देवता है। अतः इनका व्यवसाय करनेवाले व्यक्तियोंको, मोतियोंकी अँगूठी धारण करनी चाहिए। इस छोटी-सी पुस्तिका में, सविस्तर जानकारी देना संभव नहीं है, जिसके लिए पाठक क्षमा करें।

(२) **मंगल** : इस ताम्रवर्णवाले ग्रहका रत्न है अंगारमणि। यह तामसी, दुर्घटनाओंका सर्जक और कलह को बढ़ानेवाला ग्रह है। यह दया-माया नहीं जानता। नाम है मंगल, किन्तु करता है अमंगल। चन्द्र के बाद-अन्यग्रहों में केवल मंगलग्रह, पृथ्वीके अधिक निकट है। इसी कारण से, उसके गुणधर्मका, मानवपर अधिक प्रभाव पड़ता है, जो स्वाभाविक है। अंगारमणि रत्नकी अँगूठी का उपयोग किसे करना चाहिए और किसे नहीं, इस संबंधका मार्गदर्शन बादमें किया जाएगा।

(३) **बुध** : यह बुद्धिमत्ता, व्यापार और धन का कारक ग्रह है। पत्रिका में शनि-बुध प्रतियोग या बुध-चंद्र की युति भाग्यशाली मानी जाती है। पन्ना, इस ग्रहका रत्न है। सट्टा खेलनेवाले व्यापारी, साहुकार, प्राध्यापक या अन्य विद्वान, लेखक तथा वक्ता आदि को पन्ना-रत्न पहनना चाहिए।

(४) **गुरु** : यह सामाजिक प्रतिष्ठा देनेवाला और बड़ाही भाग्यदायक ग्रह है। गुरु-नेपच्यून प्रतियोग आध्यात्मिक उन्नति कराता है। गुरु के कारण नौकरी पेशेवालोंको बड़प्पन प्राप्त होता है। पारमार्थिक वाचन, सत्संग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्यादिका, गुरु कारक ग्रह है। गुरु मनुष्य को अधोगतिकी ओर कभी नहीं खींचता। संकट के समय में वह उसकी रक्षा करता है। पुखराज, गुरुका रत्न है। गुरुका रत्न, बुरे परिणाम देनेवाला कभी नहीं होता। इसलिए पुखराज रत्न का उपयोग करने में कोई धोखा नहीं है।

(५) **शुक्र :** चन्द्र के बाद, अन्य सभी ग्रहों में, शुक्र सर्वाधिक प्रकाशमान ग्रह है। सौंदर्य, कला, पत्नीसुख,, सौभाग्य आदि का यह कारक ग्रह है। चंद्र-शुक्र युति, यदि लाभस्थान में हो तो अपार सम्पत्ति प्राप्त होती है। क्योंकि दोनों ग्रहों का तेज एकत्र आ जाता है और लाभ स्थानपर उसका प्रभाव पड़ता है। श्वेत हीरा शुक्र का रत्न है। कलाकारों को शुक्र की अँगूठी अवश्य पहननी चाहिए।

(६) **शनि :** मानव जीवन को दुःखी और संकटग्रस्त बनानेवाला यह ग्रह है। साथही वह शारीरिक पीडा भी पैदा करता है। हीन मनोवृत्ति, बेकार बर्ताव, लुच्चाई करके पैसे प्राप्त करना, इत्यादि बातों का यह कारक ग्रह है। लग्नस्थान में यदि चन्द्र-शनि युति हो, तो वह व्यक्ति व्यभिचारी होता है। इतना होनेपर भी गूढ़विद्या, मंत्र-तंत्र, चमत्कार इत्यादिका कारक ग्रह भी शनि ही है। नीलमणि, शनिका रत्न है। उसका रंग नीला होता है। इस रत्नका उपयोग कौन करें और नहीं, यह बादमें बताया जायगा।

(७) **रवि :** सभी ग्रहोंका यह राजा है और उसके इर्दगिर्द सभी ग्रह घूमते रहते हैं। जिस किसी ग्रह के साथ वह संबंधित रहता है, उसका गुणधर्म वह बढ़ा देता है। रवि स्वयं, विद्या, कीर्ति राजाश्रय एवं चारित्र्य का कारक ग्रह है। रविका, दशमस्थान में होना सद्भाग्य समझा जाता है।

ग्रहों के गुणधर्म संबंध की इस संक्षिप्त जानकारी के बाद, अब हम यह देखेंगे कि किस रत्नका उपयोग कब और कौन कर सकता है।

ज्योतिषी, सामान्यतः पत्रिका या भाग्यांक देखकर किसे, किस प्रकार के रत्न का उपयोग करना चाहिए यह बताते हैं। अनेकों की पत्रिका ही नहीं होती तो अनेकों की पत्रिकाएँ अनुमान से बनायी गयी होती हैं। इस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारण, गलत पत्रिका से रत्नों के बारे में किया गया मार्गदर्शन खोटा साबित होता है और रत्नों के बारे में कोई अनुभव नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में, हाथ की रेषाओं परसे भी मार्गदर्शन हो सकता है और वह स्वाभाविक रूपसे, अचूक भी होता है। तीसरी रीत है भाग्यांकपरसे, रत्नों के बारे में मार्गदर्शन करना। यह भी एक अचूक रीत है। किन्तु भाग्यांक निकालते समय, जन्म तारीख में से ९ महीने ७ दिन कम करने के बाद आनेवाली गर्भसंभव की तारीख ध्यानमें रखनी चाहिए। गर्भ संभव की तारीख, जन्म तारीख में से किस प्रकार निकाली जाय इस विषय की पूरी जानकारी पहले प्रकरण में दी गयी है।

* * *

४. कौनसा रत्न, किसके लिए लाभकारी है ?

अब हम यह देखेंगे कि कौनसा रत्न, किसके लिए लाभदायक हो सकता है।

चंद्र : पत्रिका के अनुसार :—जिनकी पत्रिका में लग्नस्थान में, दशमस्थान में या लाभस्थान में चन्द्र हो, वे अवश्य ही मोती की अँगूठी पहनें। लाभस्थान में यदि चन्द्र-बुध युति हों, तो अधिक अनुकूलता रहती है।

हस्तरेखा पर से :—भाग्य रेखा अगर चन्द्र पर से निकलती हो या चन्द्र पर चौकड़ी हो तो मोती की अंगूठी अवश्य ही फलदायक होती है। जिनकी मस्तक रेखा पूर्णतः चन्द्र पर हों, ऐसे व्यक्तियों के लिए मोती की अंगूठी पहनना, धोखादायक है। इसमें यह शंका हो सकती है कि पत्रिका में चन्द्र है और हाथ पर की मस्तकरेखा चन्द्र पर है, तो ऐसी स्थिति में चन्द्र की अंगूठी का उपयोग करें या नहीं, इसका उत्तर यह है कि हाथपर की ग्रह-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थिति को प्रमाण मानकर, मोती की अंगूठी का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

भाग्यांक पर से :– गर्भसंभव काल के अनुसार जिनका भाग्यांक ८ आता है, उनके लिए मोती की अंगूठी का उपयोग करने में कोई हर्ज नहीं है। ऐसे समय में, यदि जन्म तारीख भी ८ हों, तो मोती निश्चित ही अधिक लाभ-दायक होता है।

जिनके पास अपनी पत्रिका ही नहीं है, या सही जन्मतारीख मालूम है किन्तु निश्चित जन्म-समय की जानकारी नहीं है, ऐसे लोगों भाग्यांक पद्धति से अपना रत्न पसंद करना चाहिए।

मंगल : पत्रिका के अनुसार :–जिनकी पत्रिका में मकर का मंगल लग्न अथवा दशमस्थान में है, उनके लिए मंगल का रत्न, लाभदायक सिद्ध होता है। सप्तम स्थान में मंगल होनेवाले व्यक्ति को मंगल-रत्न का उपयोग कभी नहीं करना चाहिए। यद्यपि वह मंगल किसी भी राशि में क्यों न हो। गुरु-मंगल का प्रतियोग होने पर, मंगल का रत्न, संकट निर्माण करता है।

हस्तरेखा पर से :–जिनके हाथ की आयुष्यंरेखा पूर्णतः गुरु ग्रह पर से निकलती है, उन्हें मंगल का रत्न प्रयोग में नहीं लाना चाहिए। यदि अंतःकरण की रेखा शनि-ग्रह पर रुकती है, तो मंगल का रत्न लाभकारी होता है। गौरवर्णीय तथा जिनकी सेहत नाजुक प्रकार की है, ऐसे व्यक्तियों को, मंगल के रत्न का उपयोग कभी नहीं करना चाहिए।

भाग्यांक परसे :––गर्भ संभव तारीख के अनुसार जिनका भाग्यांक ५ है, उन्हें मंगल–रत्न का अवश्यही उपयोग करना चाहिए। और यदि उनकी जन्म तारीख भी ५ है, तो यह रत्न अधिक लाभकारी होता है।

बुध : पत्रिका के अनुसार :––जिनकी पत्रिकामें, लाभस्थानमें चन्द्र-बुध की युति है, उनको पन्ना रत्न का उपयोग अवश्य करना चाहिए। इससे आर्थिक भाग्योदय होगा। उसी प्रकार अगर शनि-बुध का प्रतियोग हो, तो भी बुधका रत्न लाभदायक होता है।

हस्त रेखा परसे :––अंतःकरण रेखा बुध से होकर शनि ग्रहपर ठहरती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो तो पन्ना रत्न का उपयोग करने में हर्ज नहीं है। हस्तसामुद्रिक शास्त्र के आधार पर यही एक निष्कर्ष निकलता है।

भाग्यांक परसे:—गर्भ संभव तारीख परसे जिनका भाग्यांक १ आता हैं, उनके लिये पन्ना रत्न लाभदायक होता है। उनकी जन्म तारीख १ हों, तो और भी अच्छा।

गुरु : पत्रिका के अनुसार :—जिनकी पत्रिका में मकर राशि का गुरु लाभ स्थान में है और उसपर शनि या मंगल की दृष्टि है, उन्हें, गुरु के रत्न पुखराज का उपयोग अवश्य करना चाहिए। राशिस्वामि या उच्च राशिका गुरु पत्रिका में हो, तो पुखराज रत्न का कोई फायदा नही होता।

हस्तरेखा परसे:—जिनके हाथपर की आयुष्य रेखा गुरु ग्रह से होकर नेपच्युन ग्रह पर समाप्त होती है, उन्हें गुरुका या अन्य किसी ग्रहका रत्न इस्तेमाल करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे लोगों का प्रारब्ध ही अच्छा होता है। उनके लिए किसी भी रत्नकी जरूरत नहीं रहती। स्त्रियों के हाथपर यदि मंगल-शुक्रकी आयुष्यरेखा हों, तो उन्हें गुरु के रत्न का उपयोग अवश्य करना चाहिए।

भाग्यांक परसे:—गर्भ संभव तारीख के अनुसार जिनका भाग्यांक ४ आता है, उन्हें पुखराज रत्न बड़ा ही फलदायी होता है। और यदि जन्म तारीख ४ है, तो बहुत ही अच्छे परिणाम आते हैं। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि पुखराज रत्न कभी भी नुकसानकारक नहीं होता।

शुक्र : पत्रिका के अनुसार :—जिनकी पत्रिका में, शुक्रपर शनि की दृष्टि पडती है, ऐसे व्यक्तियों को शुक्र के रत्न का उपयोग करना चाहिए। श्वेत हीरा, शुक्रका रत्न है। स्त्रियों की पत्रिका में यदि व्यय अथवा अष्टम स्थान में शुक्र हों और उसपर मंगल की दृष्टि हों, तो हीरे की अँगूठी का उपयोग करना चाहिए।

हस्तरेखा परसे :— आयुष्य रेखा यदि मंगल से होकर पूर्णतः शुक्र ग्रहपर आती हों, तो शुक्र-रत्न का उपयोग अवश्य किया जाय। हाथपर शुक्र और शनि, ये दोनों ग्रह प्रभावी हों, तो शुक्र का रत्न उपयोग में लाना उचित होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाग्यांक परसे :– गर्भ संभव तारीख परसे जिनका भाग्यांक ६ आता है, उन्हें शुक्र रत्न का उपयोग करना चाहिए।

शनि :– पत्रिका के अनुसार ऐसे संकेत मिलते हैं कि शनि सर्वनाश करनेवाला और असंतुष्ट ग्रह है, अतः वह मानव का दुश्मन है। इसलिए शनिका रत्न सूचित करते समय मुझे हमेशा अस्वस्थता का अनुभव होता है। परन्तु यदि पत्रिकामें अष्टम या व्ययस्थानमें मेष राशि का शनि हों तो शनि के रत्न का उपयोग करने में कोई धोखा नहीं है। क्योंकि दोनों स्थानों में वह असहाय होता है और उसकी उपासना करनेवाले व्यक्तिपर वह संतुष्ट रहता है। चन्द्र-शनि या बुध-शनि का प्रतियोग हों तो शनि के रत्नका उपयोग कभी न किया जाय। नीलमणि, शनिका रत्न है।

हस्तरेखा परसे :– हाथपर की रेखाओं के आधारपर शनि के रत्न का उपयोग करने की मैं किसी को सिफारिश नहीं करता। इसलिए उस विषय में यहाँ कोई विचार नहीं किया गया है।

भाग्यांक परसे : गर्भसंभव तारीख परसे जिनका भाग्यांक ३ आता है, उन्हें शनि के रत्न का उपयोग करना चाहिए। जिनकी जन्म तारीख भी ३ है, उनके लिए यह रत्न बड़ा लाभकारी है।

खतरे का इशारा : मैं अपने अनुभवों से यह सलाह देना चाहता हूँ कि शनिके रत्न का उपयोग करना, संभवतः टाला जाय। नीलमणि, विष भी है और अमृत भी। लेकिन वह अमृत कब होता है, यह बताना कठिन है।

रवि : पत्रिका के अनुसार :– जिनकी पत्रिका में लग्न या दशम स्थान में रवि है, उन्हें रवि के रत्न का उपयोग अवश्य करना चाहिए। रविपर शनि की या मंगल की वक्र दृष्टि पड़ती हों, तो रवि का रत्न जरूर इस्तेमाल करें। माणिक–रविका रत्न है। उसका रंग अनार के दाने जैसा लाल होता है।

हस्तरेखा परसे :– जिनके हाथपर की रवि रेखा हर्षेल ग्रह को जा मिलती है, उनके लिए रवि का रत्न लाभकारी होता है। अतीन्द्रिय (चमत्कारपूर्ण) अनुभव, स्वप्न-दृष्टान्त व सिद्धी के लिए, रवि-हर्षेल युति अनुकूल रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि ग्रह का एकाध छोर, यदि रवि को स्पर्श करता हो, तो भी रवि का रत्न लाभकारी होता है, ऐसा अनुभव है ।

भाग्यांक पर से : गर्भसंभव तारीख पर से जिनका भाग्यांक २ आता है, उन्हें माणिक रत्न की अंगूठी का उपयोग अवश्य करना चाहिए। जिनकी जन्मतारीख-२ है, उन्हें यह रत्न बहुत लाभान्वित करता है ।

ऊपर दी गयी पद्धति के अनुसार रत्नों का उपयोग किया जाय, तो संबंधित ग्रहों के गुणधर्मानुसार अनुभव प्राप्त होते हैं। ग्रहों के गुणधर्म संबंध की जानकारी, पहले ही दी जा चुकी है, इसलिए उस विषय में अधिक गहराई में जाना जरूरी नहीं है ।

* * *

५. रत्नों का उपयोग कब प्रारंभ करें?

अब, रत्नों का उपयोग कब प्रारंभ किया जाय, यह प्रश्न महत्त्व का है। किसी भी वस्तु का उपयोग करने किसी निमित्त और काल, इन दो बातों को ध्यान में रखना जरूरी होता है। इस विषय की जानकारी निम्नानुसार है ।

चंद्र : मोती की अंगूठी का उपयोग प्रारंभ करने शुक्ल पक्ष की अष्टमी का मुहूर्त माना जाय । क्योंकि प्रतिपदा को चंद्र क्षीण होता है और पौर्णिमा के दिन वह वृद्ध हो जाता है। अष्टमी को वह बलवान बनता है। उसी प्रकार पत्रिका में कर्क या वृषभ राशि में, जिस दिन चंद्र प्रवेश करता है, वह दिन चंद्र की अंगूठी का उपयोग करने का शुभ मुहूर्त माना जाता है ।

मंगल : पत्रिका में कर्क राशि का मंगल जिस समय व्यय में जाता है, वह दिन मुहूर्त का माना जाय । चंद्र-मंगल, शुक्र-मंगल या बुध-मंगल के प्रति योग में, मंगल के रत्न का उपयोग नहीं करना चाहिए ।

बुध : बुध-मंगल या बुध-शनि के प्रतियोग का समय, बुध की अंगूठी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का उपयोग करने के लिए अनुकूल रहता है। इस योग के सिवाय अन्य किसी समय में पन्ने की अंगूठी का उपयोग, प्रारंभ न किया जाय।

गुरु : गुरु की अंगूठी का उपयोग किसी भी शुभ मुहूर्त पर किया जाय। गुरु पुष्यामृत योग के समय पर धारण की हुई अंगूठी अधिक लाभकारी होती है। उसी प्रकार 'गुरु-शनि या गुरु-मंगल का प्रतियोग अथवा जब नवपंचम योग हो, वह दिन भी इस काम के लिए मुहूर्त माना जाय।

शुक्र : शुक्र-चंद्र या शुक्र-बुध युति जिस दिन लाभस्थान में हो, वह दिन शुक्र की अंगूठी का उपयोग प्रारंभ करने शुभ माना जाय। शुक्र के अस्तकाल में अंगूठी का उपयोग प्रारंभ न किया जाय।

शनि : पहले बताया जा चुका है उसके अनुसार, जिस समय अष्टम या व्यय स्थान में शनि जाता है, वही दिन मुहूर्त का माना जाय। इसके लिए अन्य कोई भी दिन अनुकूल नहीं है।

रवि : यह ग्रह अत्यंत प्रखर और अन्य सभी ग्रहोंका स्वामी होने के कारण, रविकी अँगूठी का उपयोग प्रारंभ करने, किसी खास मुहूर्त की आवश्यकता नहीं रहती। किन्तु यदि सिंह राशिका रवि, लग्न या दशम स्थान में हो, तो संक्रांति के बाद ३ दिनों के पश्चात् (अर्थात १७–जनवरी के दिन) माणिक रत्न की अंगूठी का प्रयोग करना प्रारंभ किया जाय।

जिनके पास पत्रिकाही नहीं है या जन्म तारीख भी मालूम नहीं है ऐसे लोगों के लिए मुहूर्त किस प्रकार निकाला जाय ? ज्योतिषी, ऐसी स्थिति में भी अंगूठी का उपयोग करने कहते हैं। किन्तु इसे केवल गप हाँकना ही कहा जा सकता है। जिनकी पत्रिका नहीं है या जिन्हें अपनी जन्म तारीख मालूम नहीं है, ऐसे लोगोंको संबंधित ग्रह के वार को ही, अंगूठी का उपयोग करने, मुहूर्त का दिन मानना चाहिए। इस विषय में, इससे अधिक जानकारी, मुझे नहीं है। मुहूर्त न देखकर यदि अंगूठी का उपयोग किया जाता है तो उन रत्नों का लाभदायक अनुभव नहीं मिलता, यह सत्य हकीकत है। प्राचीन समय में, वैद्यगण, विशिष्ट समय और विशिष्ट मुहूर्त पर ही जंगल में जाकर वनस्पति - औषधियाँ लाते थे। उसकी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रक्रिया भी, ऊपर जैसी ही समझनी चाहिए। अब किस होरेपर अंगूठीका उपयोग प्रारंभ किया जाय, यह देखें। सुबह, सूर्योदय के समयपर (अनुमानतः ६ बजे) जो वार आता है, उस ग्रहका वह प्रथम होरा होता है। उदाहरणार्थ—सोमवार को सुबह ६ से ७ चंद्रका होरा, इत्यादि इत्यादि। सुबह ६ से दूसरे दिनके ६ बजेतक, २४ घंटों में २४ होरे होते हैं। चंद्रके बाद शनि, गुरु, मंगल, रवि, शुक्र व बुध के एक-एक घंटे के होरे होते हैं। बुध के बाद, चंद्रका होरा पुनः शुरू होता है। अंगूठी का जो ग्रह होगा, उस ग्रह के होरे के समय में अंगूठी, उंगली में धारण करें।

और एक अत्यंत गोपनीय बात, जो कोई नहीं जानता, बताता हूँ। किसी भी रत्न का प्रभाव, उस रत्न के सतत के उपयोग के कारण, धीरे-धीरे क्षीण हो जाता है और उस अंगूठीका गुणधर्म कम हो जाता है। इस लिए, हर तीन महीने के उपरांत, उस अंगूठी को सुबह के समय में धूप में रख दी जाय और उस पर सूर्य किरणें आती रहें, ऐसी व्यवस्था की जाय। अंगूठी, लगभग ३ घंटों तक धूपमें रखी जाय। सूर्यकिरणों के आकर्षण से वह रत्न पुनः प्रभावी होता है।

होरा गिनने की रीत

सुबहसे :	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
६–७	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
७–८	शनि	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
८–९	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चंद्र	मंगल	बुध
९–१०	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चंद्र
१०–११	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
११–१२	शुक्र	शनि	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु
१२–१	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चंद्र	मंगल
१–२	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि

और इसी क्रम में आगे गिना जाय।

सुबह में ६ से दूसरे दिन के सुबह ६ बजे तक, एक घंटे का एक, इस प्रकार २४ घंटों के कुल २४ होरे गिने जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६. रत्नों के संबंध में आवश्यक सावधानी

जिन रत्नों का उपयोग हम करना चाहते हैं वे नैसर्गिक एवं सच्चे होना जरूरी है। ऐसे रत्नों का मूल्य भी अधिक रहता है। सामान्य लोग उन्हें खरीद नहीं सकते। आजकल, रासायनिक प्रकिया-द्वारा (Synthetic) रत्न बनाये जाते हैं। ऐसे रत्नोंका उपयोग करने से कोई लाभ होता है या नहीं, उसका अनुभव क्या है, इत्यादि चर्चा के विषय हो सकते हैं। आजकल सौ-दो सौ रुपयों के मूल्यवाले रत्न, केवल काँच के टुकडे होते हैं। ऐसे रत्नों का उपयोग करने वालों को, जब फायदेमंद अनुभव नहीं होता, तब वे ज्योतिषियों के नामसे, पानी पी कर कोसने लगते हैं। इसमें ज्योतिषी का भला क्या दोष ? वास्तवमें, उपयोगमें लाये जानेवाले रत्न सच्चे और नैसर्गिक ही होने चाहिए। 'रत्न' बिल्कुल नया-कोराही होना चाहिए। किसीका इस्तेमाल किया हुआ रत्न, कभी न खरीदें।

इस प्रकारकी कुछ श्रद्धा बनी हुई है कि कुछ रत्न शापित होते हैं। अनुभव से देखा जाय तो इस श्रद्धा में काफी तथ्य है, ऐसा लगता है। जिन-जिन व्यक्तियों के पास होप-हीरा रहा, उन सभीका सर्वनाश हुआ है। ऐसे अन्य भी कुछ शापित रत्न होना संभव है। मेरे एक वकील मित्र थे। उन्होंने अपने एक मित्रकी, मूल्यवान रत्न की एक अंगूठी गिरवी रखकर, उसे कुछ रकम कर्ज के तौरपर दी। आश्चर्य की बात है कि वकील साहब के पास उक्त अंगूठी के आतेही एक महीने के भीतर उनकी पत्नी का देहांत हो गया। बड़ा कमाऊ लडका, दुर्घटनाग्रस्त हो गया, किन्तु सौभाग्यसे वह बच गया। दूसरा लडका, जो पहलेसे ही पढ़ाई में स्कॉलर था, वह बी.कॉम की परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहा। इतना सारा होनेपर फिर कहीं वकील साहब की आँखें खुलीं और उन्होंने वह अंगूठी, अपने मित्र को लौटा दी। इसलिए जहाँ तक हो सके, किसी की इस्तेमाल की हुई रत्न की अंगूठी कभी खरीद न करें। क्यों कि जब अंगूठी बेचने तक की बारी जिसपर आयी हों, वह व्यक्ति दुर्दैवी व कंगाल बना है, ऐसा मान लेना चाहिए। अतः पाठकों को यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि दुश्मन को पागल बनाने के हेतु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जंतर-मंतर के प्रयोग करके, आपपर पूर्ण मोहनी डालनेवाले लोग, मोहित की हुई अंगूठियाँ देते हैं। जबतक, इस प्रकारकी अंगूठी, खरीदने वाले की उंगली में रहती है, तब तक वह व्यक्ति, अंगूठी देनेवाले का गुलाम बना रहता है। महिलाओं को, इस विषय में अधिक सावधानी बरतनी चाहिए। संक्षेप में, इधर-उधरसे रत्न खरीदने के बजाय, सीधे जौहरी की दूकान से ही वह खरीदा जाय। रत्न खरीदने के बाद, तीन दिनतक उसे गूलर के फल में रखें। इससे, उस रत्नपर अन्य लोगों-द्वारा जो कुसंस्कार हुए होंगे वह नष्ट हो जाएँगे।

* * *

७. रत्न के लाभालाभ की कसौटी

साधारणतः रत्न फलदायी है या नहीं, इस बात का अनुभव प्राप्त होने, कितने दिन तक राह देखी जाय, इस विषय का भी विचार किया जाना चाहिए। दीर्घ अनुभव से, निम्नानुसार काल-मर्यादा तय की गयी है :–१) चंद्र-३ दिन, २) मंगल-११ दिन, ३) बुध-१ दिन, ४) गुरु-१५ दिन, ५) शुक्र- २१ दिन, ६) शनि-२१ दिन, ७) रवि- ७ दिन। उपर्युक्त समय-मर्यादा में रत्न के गुणधर्मानुसार यदि अनुभव प्राप्त न हों, तो वह रत्न लाभदायी नहीं है, ऐसा मानना चाहिए। लेकिन नीलमणि, अंगारमणि और माणिक, इन रत्नों के बारे में उपर्युक्त समय में यदि कोई अशुभ अनुभव न हुआ हो तो, ये रत्न लाभकारी होंगे ऐसा समझें। जौहरी से रत्न की परख कर लेनी चाहिए। रत्नों में, मुख्यतः निम्नलिखित तीन दोष पाये जाते हैं :–

१) **काला या करट :** रत्न में कहीं भी काला या कत्थई अथवा अन्य किसी भी प्रकार का दाग (Spot) दिखायी दे तो उस रत्न को दोषपूर्ण माना जाय।

२) **चीरा :** बहुतेरे रत्नों में चीरे (Cracks) दिखायी देते हैं। ऐसे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रत्न सदोष होते हैं। और उन्हें धारण करनेवालों को कोई अनुभव प्राप्त नहीं होता।

३)पहलू : धूप में सफेद कागजपर रत्न रख कर उसे धीरे-धीरे घुमाया जाय और उसका निरीक्षण किया जाय। पहलू अगर एकसे हों तो सब तरफसे रत्न का प्रकाश एकसा दिखायी देगा। एकाध पहलू भी यदि दोषपूर्ण हो तो उस हिस्सेमें से धुंधलासा (Dim) प्रकाश दिखायी देता है।

ऊपर बताये में से एक भी दोष जिसमें है, वैसा रत्न कभी खरीद न करें।

अब, किस रत्न की अँगूठी किस उंगली में धारण की जाय, इस विषयमें सोचेंगे। इस संबंध में निम्नलिखित मार्गदर्शन उपयोगी होगा।

(१) रवि : रवि के माणिक-रत्न की अंगूठी अनामिका (मध्यमा और कनिष्ठिका के बीचकी अँगुली) में पहनें।

(२) बुध : बुध के पन्ना-रत्न की अंगूठी, सबसे छोटी अंगुली (छिगुनी) में अथवा अनामिका में पहनी जाय, तो भी उसमें कोई दोष नहीं है।

(३) चंद्र : चंद्र के मोती की अंगूठी के लिए छोटी (छिगुनी) उंगली ही उचित है। चन्द्र का रत्न, भूल से भी अनामिका में कभी न पहनें। वह अमावस्या का योग हो जाएगा। चंद्र का लोप हो जाने पर भाग्य कहां रहा ? और उस अंगूठी का उपयोग भी क्या होगा ?

(४) मंगल : मंगल की अंगूठी अनामिका में पहनें। उसके लिए कोई अलग उंगली नहीं है। किन्तु गुरु की उंगली में मंगल की अंगूठी न पहनें अन्यथा अपकीर्ति होगी और संकट आयेंगे।

(५) गुरु : गुरु का रत्न, तर्जनी अँगुली में ही धारण करें।

(६) शुक्र : शुक्र की अंगूठी गुरु या रवि की अंगुली में पहनें। रवि की उंगली में पहनने पर अधिक लाभ होता है।

(७) शनि : शनि की अंगूठी, बीचवाली (मध्यमा) उंगली में कभी न पहनें। अंगूठी का उपयोग प्रारंभ करने से पहले, उसे देवता के आगे रख कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुम-कुम-फूल अर्पण करके उसकी पूजा करें। अगरबत्ती और दीप से उसकी आरती उतारकर, वह एक संरक्षक तथा भाग्यदायिनी देवता है, ऐसा मानकर, उंगली में धारण करें। उस दिन के ग्रह का होरा देखकर, उस होरे के समय में अंगूठी का उपयोग प्रारंभ किया जाय। पति की ओर से पत्नी को या पत्नी के द्वारा पति को, स्वयं के किसी भी रत्न की अंगूठी, गुरु पुष्यामृत योग, पौर्णिमा, अक्षय्यतृतीया अथवा चैत्र शु. १ ('गुढी पाडवा') के दिन पहनानी चाहिए। इस से पति-पत्नी-प्रेम अबाधित रहता है।

कुछ लोगों की उंगलियों में एक से अधिक अंगूठियाँ दिखायी देती हैं। एक से अधिक अंगूठियों का उपयोग करने में कोई हर्ज नहीं है। किन्तु उस संबंध के निम्नलिखित संकेतों को ध्यान में रखना चाहिए।

(१) गुरु और रवि इन दोनों ग्रहों की अंगूठियों का उपयोग, एक साथ कभी न करें। गुरु और रवि, ये दोनों शुभ ग्रह हैं। दोनों की अंगूठियों का एक साथ उपयोग करना, याने उन दोनों की शक्ति के संबंध में, विश्वास का डाँवाडोल होना है। इसकी यह प्रक्रिया होती है कि इस प्रकार दोनों ग्रह रोषित होकर, जीवन बरबाद करते हैं।

(२) शुक्र और बुध, इन दोनों ग्रहोंकी अँगूठियों का भी, एक साथ कभी उपयोग न करें। इस से नपुँसकत्व आनेकी संभावना रहती है। स्त्रियों के बारे में भी, इसी प्रकारका अनिष्ट योग आता है। अनियमित मासिक धर्म, वंध्यत्व आदि प्रकार के दोष निर्माण होते हैं। जो विष ही है, उसकी परीक्षा करने की जरूरत नहीं होती। अतः इस प्रकार के प्रयोग कभी न करें।

(३) चंद्र और शुक्र इन दोनों ग्रहों की अँगूठियों का उपयोग एक साथ अवश्य करें। इस से उत्तम पत्नीसुख प्राप्त होता है एवं व्यापार-उद्योग में बड़ा लाभ होता है तथा अमीरी आती है।

(४) गुरु और मंगल, इन दोनों ग्रहों की अँगूठियों का उपयोग एक साथ कभी न करें। गुरु शुभ तो मंगल अशुभ ग्रह है। दोनों अँगूठियाँ एक साथ पहनने पर, गुरु और मंगल दोनों ग्रहोंका प्रभाव नष्ट हो जाता है और रत्नों का गुणधर्म भी टिकता नहीं है। गुरु-मंगल की अँगूठी का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक साथ उपयोग करने से, आबरू जाने, नौकरी में परेशानी होने और जेल में जाने के योग आने की बड़ी संभावना रहती है। इस स्थिति में गुरु-ग्रह निर्बल होता है और उसके कारण प्रतिष्ठा कम हो जाती है।

(५) ऊपर की ही वजहसे, गुरु और शनि के गहोंकी अँगूठियों का भी, एक साथ उपयोग न किया जाय।

(६) सट्टा,, शेरबाजार, रेस, रमी (ताशपर खेला जानेवाला एक प्रकारका जूआ) या अन्य किसीभी प्रकार का जूआ, इत्यादि का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को, चंद्र और शनि की अँगूठियों का एकसाथ का उपयोग, बड़ाही लाभकारी होता है, यह सच है। परंतु ये रत्न लाभदायक हैं या नहीं, इस बात को पत्रिका, हस्तरेखा या भाग्यांक परसे देख लेना चाहिए।

(७) नवग्रहों की अँगूठी का उपयोग करने से कुछ अधिक प्रमाण में भाग्योदय होकर, संसार अधिक सुखमय होता है या नहीं, यह बड़ा मतभेद का प्रश्न है। मेरे एक सन्मानीय मित्र, जो हर महीने लाखों रूपयों का उलट फेर करते थे, उनके पास एक महीसूरी ज्योतिषी आया और उसने नवग्रह की अंगूठी का उपयोग करने की उन्हे सलाह दी। उक्त अंगूठी का उपयोग प्रारंभ करने के चारही महीनों के भीतर, मंदीकी बाढ़ आयी और हमारे उस मित्रने ३२ लाखका दिवाला निकाला। आज वह बिनौले और खली की एक छोटीसी दूकान लगाये किसी प्रकार अपना गुजारा करता है। इस किस्से में, नवग्रह की अँगूठी का उसपर कुप्रभाव पड़ा, या उसकी किस्मत ने धोखा दिया; यह कहना मुश्किल है। नवग्रह की अँगूठीका उपयोग करने से जिनका भाग्योदय हुआ है, ऐसे भी व्यक्ति होंगे, किन्तु मेरे देखने में, ऐसा कोई नहीं आया। इसलिए इस विषय में मौन रखना ही उचित होगा। रत्नों को किस धातुमें जड़ा जाय, इस विषय में किसी की कोई भी राय क्यों न हो, किन्तु मेरा अपना तो यह स्पष्ट मत है कि रत्नों को सोनेकी या कमसे कम चौदह कॅरेटवाले सोनेकी अँगूठियोंमें ही बिठाया जाना चाहिए। राजाको, रहने के लिए 'राजभवन' ही चाहिए, यही विचारधारा यहाँ पर लागू होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८. जो रत्न खरीद नहीं सकते- उनके संबंध में

अब, सच्चे रत्न खरीदने की जिनमें ताकद नहीं है, उन लोंगोंके लिए भी यहाँ पर कुछ मार्गदर्शन करता हूँ ।

(१) नाग के विषैले दाँत को या मेंढक के तीन नंबर के मणिको अगर घरमें रखा जाय, तो उस घरमें निश्चित ही समृद्धि आती है, इस प्रकार मेरे सद्‌गुरु बाबाने, मुझसे कहा है। जिन्हें ये चीजें प्राप्त करना संभव है, वे इन चींजों को प्राप्त करके अवश्य अपने घरमें रखें। उपर्युक्त दोनों वस्तुओंको, मृग-नक्षत्र के पानीका स्पर्श अवश्य होना चाहिए ।

(२) आकाश में से गिरनेवाली उल्काएँ किसीभी रत्न की अपेक्षा; अधिक मूल्यवान मानी जाती है। इन उल्काओंका एक टुकडाभी अगर पासमें रखा जाय या उसे अंगूठीमें बिठाया जाय, तो वैभव, अमीरी और दीर्घायुष्य का लाभ होता है। किन्तु इसप्रकारकी सही उल्का प्राप्त करना, उतनाही दुश्वार है ।

(३) पहले के जमाने में, और आज भी अनेक लोग अपने घरों में सोनेकी मुहर रखते हैं और लक्ष्मी पूजन के दिन, उसकी पूजा करते हैं। यह मुहर निजामशाही की ही होनी चाहिए, ऐसा संकेत है। कुछ लोग रानीकी छापवाला चांदीका रुपया भी, अपने घरों में रखते हैं। उपर्युक्त दोनों प्रकार के सिक्के, राजलक्ष्मीके निदर्शक हैं। उनसे लाभ होताही है। मैंने भी, अपने घरमें, रानी-छांप चांदीका रुपया रखा है और लक्ष्मीपूजनपर, मैं उसकी पूजा करता हूँ। धन की दृष्टि से मैं सुखी-संतोषी हूँ ।

(४) एक जुडवा सीप लाकर, उसे उबाल ली जाय और उसमें नागकेसर डालकर, उसे फिर से जोडें और उस पर पीला दोरा लपेटें। उक्त सीप को, देवताओं के साथ पूजा में रखें। सीप में, मोतियों (अर्थात् वैभव) की सुरक्षा करने की शक्ति होती है। इस प्रकार की सीप, आपके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घरके वैभव की भी रक्षा करेगी। नागकेसर, धनदा वनस्पति होनेसे, उक्त सीप आपके धनकी वृद्धि करके रक्षण करेगी यह बिल्कुल सत्य है।

(५) दाहिना शंख :–दाहिना शंख जिसके घरमें हो, वह अमीर बनता है, ऐसा कहते हैं। किन्तु यह केवल कवि कल्पनाही है। दाहिने शंख की, जिंदगी भर पूजा करनेवाले कोर्ट-कचहरियों में लिखा पढ़ी करनेवाले और ऋणमें डूबे हुए कई व्यक्ति मरे पूर्ण परिचित हैं। दाहिना शंख मिलना भी, उतना ही दुर्लभ है। अतः उसपर उतना भरोसा न रखें, इतना ही मैं यहाँ सूचित करना चाहता हूँ।

(६) रुद्राक्ष :– गुरु चरित्र में, रुद्राक्ष की महिमा का माहात्म्य वर्णित किया है। रुद्राक्ष धारण करने पर, उसकी फलश्रुति क्या मिलती है, इसका मुझे कोई अनुभव नहीं है। इसलिए, उस विषय में अधिक कुछ नहीं लिखता। केवल जानकारी के लिए इतना बता दूँ कि साँस (दम) की बीमारी में औषधी के रूप में उसका उपयोग करते हैं।

(७) चकमक पत्थर :– रत्नों के बाद चकमक ही एक ऐसी वस्तु है जिसपर कोई भी संकल्प अधिक प्रमाण में प्रोक्षित होता है और हमारे संकल्प के अनुसार उसे मोहा जा सकता है। इसलिए गरीब लोगों को चाहिए कि वे रत्नोंकी लालसा न करके, पौर्णिमा के दिन, सूर्यास्त के समय में नदी या समुद्रपरसे अथवा जहाँ कहींसे भी प्राप्त हो सके, वहाँसे एक शुभ्र-सफेद चकमक ले आएँ। फिर आसनपर बैठ कर, उस चकमक पर अपना ध्यान केंद्रित कर के, दृढ विश्वास के साथ संकल्प करें कि "यह चीज, जबतक मेरे पास है, तबतक मैं धनवान और सुखी रहूँगा" यह संकल्प, कमसे कम १०८ बार दुहराएँ। अनंतर, उस चकमक की पूजा करें। संभवतः उसे तांबे की अँगूठी में बिठाएँ और तर्जनी अँगुली में पहनें। इस अँगूठी के संकल्प का हमेशा स्मरण रहे, इस हेतु कोई व्रत रखना चाहिए। एक दिन छोडकर चावल खाना या अपनी प्रिय खाने की कोई चीज वर्ज्य करना अथवा इसी प्रकार का कोई अन्य उपाय सुझाया जा सकता है।

आखिर में, यह कहना चाहता हूँ कि, जिस प्रकार आम की मिठास

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फूलों की सुगंध, वनौषधियों में रोगपरिहार करने का गुणधर्म, इत्यादि ईश्वरीय संकल्प के अनुसार निर्मित हैं, उसी प्रकार रत्नों में तथा अन्य कुछ चीजों में भाग्य, सुख तथा धन देनेवाले गुणधर्म भी, ईश्वरने ही निर्माण किये हैं। यह विचारधारा, तर्कसंगत है। अतः रत्नों का तथा उपर्युक्त अन्य वस्तुओं का, शास्त्रीय पद्धति के अनुसार उपयोग करके, मेरे सभी पाठक सुखी हों, यही मेरी शुभ-कामना है।

* * *

९. रंग और आपका जीवन

जिस प्रकार माणिक, नीलमणि, पुखराज इत्यादि रत्नों में शुभ तथा वैभवशाली बनाने के गुण हैं, उसी प्रकार कुछ विशिष्ट रंगों का भी, मानवी जीवन पर निश्चित रूपसे परिणाम होता है। फूलों के, तितलियों के, पक्षियों के इत्यादि नैसर्गिक रंग देखकर मन प्रसन्न होता है। और तो क्या, यह सारी सृष्टि ही मानो रंगों का एक मेला एवं सुन्दर गालीचा है, ऐसा कहने की इच्छा होती है। कोई भी वस्तु देखें, तो आकार के साथ ही, उसका अपना एक रंग भी दिखायी देगा। पानी जैसी, बिल्कुल इनी-गिनी ही कुछ चीजें होंगी, जिनका अपना असली रंग न हो। जिन-जिन वस्तुओं के सान्निध्य में वे चीजें आती हैं, उन-उन वस्तुओंका रंग वे धारण कर लेती हैं।

रत्नों की तरह, रंग भी मानवी जीवनपर असर करते हैं या नहीं, ऐसा प्रश्न उपस्थित होता है। अनुभवों की कसौटी देखने पर इस प्रश्न का उत्तर हाँ में ही दिया जाना चाहिए। इस संबंध के मेरे अपने अनुभूति-जन्य दो-तीन उदाहरण यहाँ दे रहा हूँ।

सर दर्द के लिए, पीला रंग प्रकोप करनेवाला है। मेरे कमरेका रंग पीला है। जब भी, पित्त के कारण मुझे सरदर्द हो जाता है, तब मुझसे अपने कमरे में बैठा नहीं जाता। पित्तका प्रकोप अधिक बढ जाता है। इसके लिए मेरा कायमी इलाज है—एकाध नीले रंगका हाथरूमाल आँखोंपर रख कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शांति से सोए रहना। पीला और नीला रंग एक दूसरे में मिलाने पर हरा रंग तैयार होता है। यह बात सब जानते हैं। दीवारपर लगे पीले रंग की विशिष्ट किरणें, नीले रूमाल में से जब प्रवेश करती हैं तो आँखों को हरे रंग का आभास होता है और सरदर्द कम हो जाता है। पाठक, इस बात का अनुभव अवश्य लें। पीले रंग के कमरे में मच्छर बहुत कम हुआ करते हैं। यह सभी का अनुभव है। योगियोंका प्रिय रंग नीला है। जप ध्यान, धारणा इत्यादि करते समय, नीले (आकाशी) रंग के मलमल जैसे महीन व मुलायम रूमाल की पट्टी यदि आंखोंपर बांध ली जाय, तो मनको एकाग्र बनाने में वह बहुत सहायक होती है। गहरे अंधेरेवाली खोली में बैठने का डर लगता है। लेकिन अगर उसी में भरपूर उजाला हो तो मन प्रसन्न रहता है। रंग-बिरंगे फूल, तितलियाँ और मोर की तरह स्वर्गीय रंगों के परोंवाले पक्षियों को देखकर मन फूला नहीं समाता।

सृष्टि में, निम्नानुसार मुख्य छह रंग हैं :—

(१) लाल, (२) पीला, (३) हरा, (४) नीला, (५) सफेद और (६) काला। इनके अलावा, कत्थाई, गेरुआ, जामुनी इत्यादि रंग भी दिखाई देते हैं। लेकिन ये सभी, ऊपर बताये छह रंगों में से किन्हीं दो रंगों की मिलावट से तैयार किये जाते हैं। अब, प्रत्येक रंग का गुणधर्म क्या है, इसका सविस्तर वर्णन देखें :—

(१) **लाल** :—यह बहुत महत्त्वका रंग माना जाता है। मनुष्य तथा अन्य प्राणियों के शरीर के खून का रंग लाल होता है। लाल रंग, डर या धोखा बतानेवाला भी है। इसी कारण रेलवे तथा बसों के लिए लाल रंग के दिये रखे जाते हैं। लाल रंग का दिया दिखायी देनेपर, वाहन आगे नहीं बढ़ेगा। क्योंकि लाल रंग यह बताता है कि आगे खतरा है। गणपति—विघ्नहर्ता होने के कारण ही, उन्हें लाल फूल अधिक प्रिय है। लाल रंग पवित्र रंग भी माना गया है। स्त्रियों का सौभाग्य चिन्ह कुमकुम लाल रंगका होता है। गुलाल भी लाल रंगका होता है। सूर्योदय के समय में पूर्व दिशा लाल रंग से भर जाती है। लाल रंग, सांसारिक लोगोंका रंग है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२) पीला :— वुद्ध भिक्षु, पीले रंग के वस्त्र परिधान करते हैं। पीला रंग, त्याग का निदर्शक है। पीला रंग, ज्ञानपर आवरण डाल देता है। **'हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्'** (सुवर्ण के पीले-रंग के पात्रने सत्य का मुँह ढँक दिया है।) ज्ञानमार्गीय व्यक्ति, पीले रंगके वस्त्र परिधान नहीं करेंगे। पीला रंग शगुन और स्थिरता प्रदान करनेवाला है। स्त्रियाँ कुमकुम क नीचे, माथेपर हल्दीभी लगाती हैं। (विशेष रूपसे, महाराष्ट्र में यह प्रथा है।) लग्न के समारोह में, वर-वधू को हल्दी लगायी जाती है। कडा भी हल्दी का होता है। पीले और नीले रंगों में अच्छा मेल है।

(३) हरा :– इस रंग को शुभ माना जाता है। हरे रंग की झंडी या दिया बताया जाने पर, वाहन के लिए आगे का रास्ता आसान और निर्विघ्न है, ऐसा सूचित होता है। मुसलमान लोग हरे रंग को बड़ा ही पाक मानते हैं। कहीं-कहीं, मेहमानों की विदाई के समय हरे रंग के पानका बिडा दिया जाता है। शर्तका बीडा जो उठाया जाता है, उसका रंग भी हरा ही होता हैं। पहले के जमाने में, पराक्रमी योद्धा का, बीडा और अन्य मौल्यवान वस्तुएँ इनाम में देकर, राजाओं की ओरसे सम्मान किया जाता था। चैत्र शु. १ ('गुढी पाडवा') के दिन, नीमकी हरी पत्तियों की आवश्यकता रहती ही है। लग्न या अन्य मंगल प्रसंगों में, दरवाजेपर, आम्रवृक्ष के हरे पत्तों के वन्दनवार लगाये जाते हैं। हरा रंग, लगभग सभीको प्रिय लगता है।

(४) नीला :–नीला रंग योगमार्गियोंका रंग है। आकाश नीला दिखाई देता है। समुद्र का पानी नीला है, ऐसा आभास होता है। भगवान शंकर को नीला रंग बहुत प्रिय है। क्योंकि उनका कंठ नीला है। नीली आँखों वाले व्यक्ति (स्त्री-पुरुष) दूसरोंको वश कर लेते है और सहज ही में उन पर अपना प्रभाव डालते हैं। इंग्लैंड और अमेरिका इत्यादि देशोंमें नीली (भूरी) आँखें, सौंदर्य की प्रतीक मानी जाती हैं। नीले रंगवाले कमरे में सभी को अधिक प्रसन्नता का अनुभव होता है। गहरे नीले रंग की अपेक्षा फीका-नीला रंग और भी मोहक लगता है। इसी कारणसे सफेद और नीले रंग का अच्छा मेल है। गोरा व्यक्ति, नीले पोषाख में बहुतही फबता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५) **सफेद** :– सफेद रंग, ज्ञानमार्गियों का रंग है। एक मात्र सफेद रंग में से ही, शेष सात रंग उत्पन्न होते हैं। सूर्य की किरणें यदि पहलूदार काँच मेंसे उसपार जाती हैं, तो उसमें सात रंगोंका एक पट्टा दिखायी देता है। इन्द्रधनुष्यभी इसी प्रकार से बनता है। इससे, ऊपर के विचार की पुष्टि होती है। सफेद रंग, विश्व का प्रमुख रंग है। सफेद रंग के साथ, अन्य कोई भी रंग घुल-मिल जाता है। सफेद रंग पवित्रता का भी द्योतक है। जिस प्रकार ॐ शब्दसे अनंत सृष्टि निर्माण हुई है, उसी प्रकार सफेद रंग से सृष्टि के सभी दृश्य उत्पन्न हुए हैं। सफेद रंग शान्ति-समझौते का रंग भी माना गया है। पराभूत सेना की ओरसे, यदि सफेद झंडी बतायी जाती है तो लडाई बंद हो जाती है और दोनों पक्षों में सुलह होती है।

(६) **काला** :–यह अशुभ और अपवित्र रंग माना जाता है। जादू-टोना, करनी इत्यादि अघोर प्रकार के कृत्य, इस रंग के हैं। हिप्नोटिझम और मॅस्मॅरिझम का प्रयोग करनेवाले व्यक्ति, यदि काले कपडे पहनते हैं, तो उनका प्रयोग बहुत सफल रहता है, ऐसा मेरा अनुभव हैं। काले रंग के लोगों को पिशाच्चबाधा जल्दी होती है, ऐसा मानते हैं। सभी प्रकार की अशुभ और गंदी बातें अँधेरे में ही की जाती हैं, यह बात सभी जानते हैं। जादू-टोना और मंत्र-सिद्धी के लिए अमावस की रातको, योग्य माना जाता है। काला रंग, सफेद रंग का बिल्कुल विरोधी रंग होनेसे, सफेद रंग के विरोधी गुणधर्म काले रंग में होते हैं, यह बात निश्चित है।

शेष तीन रंगों के बारे में यहाँपर कोई जानकारी नहीं दी गयी है। अब, किसे, किस रंगका उपयोग करना चाहिए, इसकी सविस्तर जानकारी नीची दी जा रही है :–

(१) **लाल** :–जन्म तारीख में से ९ महीने ७ दिन कम करने पर, यदि उसके एक-एक अंक के जोड के अंत में २-का आँकडा आता है, तो उसके लिये लाल रंग लाभदायक रहेगा। किसी भी रविवार से इस रंग का उपयोग करें। कुछ लोग, सभी कपडे लाल रंगके पहनना पसंद नहीं करेंगे। उन्हें कम से कम लाल रंग का रूमाल या लाल रंगके मोजे इस्तेमाल करने चाहिए। लाल रंगका एकाध जांघिया भी पहन सकते हैं। उनके लिए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२,११,२० और २९ ये तारीखें शुभ हैं। इस लिए, कम से कम इन तारीखों-पर तो ये कपडे पहनने चाहिए। इन तारीखोंपर, लाल टमाटर, चुकंदर इत्यादि लाल चीजें खानी चाहिए। इन तारीखोंपर, जिनका भाग्यांक ८ है, ऐसे व्यक्तियों क साथ, किसी प्रकारका व्यवहार न करें, क्योंकि उसमें असफलता मिलेगी। माणिक रत्न का उपयोग करें। इससे मान-सम्मान बढ़ेगा।

(२) **पीला** :—उपर्युक्त पद्धति से जिनका भाग्यांक (जन्मांक) ४ आता है, उनके लिए पीला रंग लाभदायी है। ऊपर बताये अनुसार, यथा-संभव पीले कपडेही पहनें। ४,१३ और २२, इनकी शुभ तारीखें हैं। इन दिनोंपर तो पीले कपडे अवश्य पहनें। पीले रंगके पदार्थ खाएँ। जिनका भाग्यांक १ है, उनके साथ किसी भी प्रकार का व्यवहार न करें। कार्य सफल नहीं होगा। पुखराज रत्न का उपयोग करें। कीर्ति बढेगी।

(३) **हरा** :—जिनका भाग्यांक (जन्मांक) १ है, उनके लिए हरा रंग लाभदायक रहेगा। इनकी शुभ तारीखें हैं—१,१०,१९ और २८। कमसे कम इन तारीखोंपर तो इन्हें हरे रंग के कपडे (ऊपर बताये अनुसार) अवश्य पहनने चाहिए। हरी-पत्ती-भाजी, हरे रंग के फल खाएँ। जिनका भाग्यांक ७ है, ऐसे व्यक्तियों के साथ इन तारीखों पर व्यवहार न करें। सफलत नहीं मिलेगी। पन्ना-रत्न का उपयोग करें। धन प्राप्ति होगी और व्यापार में बरकत रहेगी।

(४) **नीला** : ऊपर बताये अनुसार जिनका भाग्यांक (जन्मांक) ३ आता है उनके लिए नीला रंग लाभदायक होगा। नीले रंगका कमीज तो अवश्य पहनें। इन्हें ३, १२, २१ व ३० इन शुभ तारीखों पर तो नीले रंग के कपडे जरूर पहनने चाहिए। नीले रंगकी स्याही का उपयोग करें। नीले रंगवाली मिठाई खाएँ। देवता को नीले रंग का फूल अर्पण करें। जिनका भाग्यांक (जन्मांक) ९ है, ऐसे व्यक्तियोंके साथ किसी प्रकार का व्यवहार न करें। काम सफल नहीं होगा। शनि के रत्न का उपयोग करने में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन यह अवश्य ध्यान में रखा जाय कि हाथ परकी आयुष्य रेखा यदि गुरू ग्रहको पार कर रही हो और अंतःकरण रेखा गुरु-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहपर समाप्त होती हो, तो ही शनि के रत्न का उपयोग करने में धोखा नहीं रहेगा। रत्न लाभकारी हुआ तो ऐहिक सुख-भोग की प्राप्ति होगी।

(५) **सफेद** :– जिनका भाग्यांक (शुभांक) ८ है, उनके लिए सफेद रंग लाभकारी रहेगा। शुभ्र कपडे पहनें। क़मसे कम ८, १७ और २६ इन शुभ तारीखों पर तो शुभ्र कपडे अवश्य पहनें। सफेद अन्न खाएँ। दूध, चावल, दही इत्यादि पदार्थ खाए जा सकते हैं। इन तारीखोंपर, जिनका भाग्यांक (जन्मांक) ५ है, ऐसे व्यक्तियों से, किसी तरह का व्यवहार न करें। अपमानित होना पडेगा। अछिद्र मोती की अँगूठी लाभदायक होगी। भाग्य खुलकर धन और बडप्पन मिलेगा। वायदे के व्यापार (स्पेक्युलेशन) में अपार सफलता प्राप्त होगी।

(६) **काला** :– जिनका भाग्यांक, ऊपर बताये अनुसार ९ होगा, उनके लिए काला रंग शुभ रहेगा। उन्हें काले रंग के कपडे अवश्य पहनने चाहिए। इन की शुभ तारीखें ९, १८ व २७ हैं। कमसे कम इन तारीखों पर तो काले कपडे जरूर पहनें। काले रंग के फल खाएँ। जिनका भाग्यांक (जन्मांक) ६ है, ऐसे व्यक्तियों के साथ किसी प्रकार का संबध न रखें। असफलता मिलेगी तथा अपकीर्ति होगी।

इस पुस्तक में, अमुक भाग्यांक (जन्मांक)–वाले व्यक्तियों के साथ व्यवहार न करें, इस प्रकार जो उल्लेख हुआ है, वह सिर्फ उनकी शुभ तारीखोंपर व्यवहार नहीं करना चाहिए–इस प्रकार समझें।

बहुतेरे लोगों को, अपनी निश्चित जन्म तारीख की जानकारी नहीं होती है। कुछ लोग तो अपनी दो-दो जन्म तारीखें बताते हैं। यह तो बड़ा ही विसंगत लगता है। ऐसे, जन्म तारीख न जाननेवाले व्यक्तियोंके लिए। इस ग्रंथ का भला क्या उपयोग होगा, ऐसा भी प्रश्न पैदा हो सकता है। उनके लिए एक अनुभवसिद्ध एवं सरल रीत बताता हूँ। वह इस प्रकार है :––

अचानक, घडी में समय देखें। मात्र उस घडी का समय, रेडियो के समयानुसार होना चाहिए। मान लीजिए, आपने जो समय सुबह में देखा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह ६ बजकर ५२ मिनिट का समय है। इन सभी आँकडोंका जोड–४ आता है (६+५+२=१३, १+३=४) यह–४ की संख्या, १०८ की संख्या में से कम कर दी जाय। (१०८–४=१०४) अब यह जो संख्या–१०४ रही है, उसका फिरसे जोड होगा–५ (१+०+४=५)। मान लीजिए कि यह आपका भाग्यांक (जन्मांक) है। पहले के प्रकरण में, मैंने प्रत्येक भाग्यांक (जन्मांक) वाले व्यक्ति का वर्णन किया है। उस भाग्यांक (जन्मांक) के अनुसार आपका वर्णन मिलता-जुलता आना चाहिए। उस में यदि थोडा-सा भी फर्क दिखायी दे, तो मान लीजिए कि आपकी घडी का समय गलत था। दूसरे दिन, फिरसे, ध्यानपूर्वक समय देखिए। योग्य वर्णन आ जाय तो वह आपका भाग्यांक (जन्मांक) निश्चित हो गया, ऐसा समझिए। इस आंकडे परसे आपकी राशि भी निश्चित हो जाएगी। मासिक–भविष्य देखने, इस राशिके अनुसार, आपका अनुमान ठीक-ठीक उतरेगा, इसमें कोई शंका नहीं है।

इस पुस्तकमें, सारा विश्व रंगमय होनेसे, प्रत्येक रंगका गुणधर्म, जीवनपर होनेवाला उसका परिणाम, तथा जीवन को सफल बनाने के लिए, किसे, कब, कौनसे रंगोंका उपयोग करना चाहिए, किसके साथ व्यवहार नहीं करना चाहिए, किस प्रकार के रत्न का उपयोग करें, इत्यादि सभी प्रकारकी मेरे गुरुसे ज्ञात जानकारी मैंने पाठकों के सामने रख दी है। अनुभव के उपरांत, इस विषय में विश्वास पैदा हों। रंग-शास्त्र और रत्न-शास्त्र, बेकार के शास्त्र हैं, ऐसी मान्यता के दिन अब चले गये हैं। इन सारे उपचारों से, पाठक सुखी हों, यही शुभेच्छा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष महर्षि : आचार्य अ. ल. भागवत रचित लोकप्रिय ग्रंथ

(१) हस्तरेखा दर्पण :

यह ग्रंथ अत्यंत सरल भाषा में लिखा गया है और इसमें ६२ रेखा चित्र भी दिये गये हैं। इस ग्रंथ के आधारपर, आप किसी के भी हाथ की रेखाएँ देखकर, सहज ही में ठीक-ठीक भविष्य बता सकेंगे।

इस ग्रंथ के प्रकाशित होते ही बॉम्बे ॲस्ट्रोलॉजिकल सोसायटीने रु. १५००/–(पंद्रह सौ रुपयों) का पुरस्कार प्रदान करके इसे सम्मानित, किया है एवं सामुद्रिक शास्त्रमें अनमोल वृद्धि करनेवाले ग्रंथ के नाते इसे गौरवान्वित किया है।

(२) अनंत की ओर झंप :

दिनों दिन हम्परा जीवन अस्थिरता की ओर बढ़ता जा रहा है। स कारण से प्रत्येक व्यक्ति अस्वस्थ एवं भीति ग्रस्त दिखायी देता है।

शारीरिक व्याधि, दरिद्रता, चिंता और मृत्युका डर, इन सारी बातोंपर मात करके, जीवन कैसे सुखी बनाएँ, इस संबंध की संपूर्ण जानकारी इस ग्रंथ में पढिए।

आप के परिवारके लिए यह ग्रंथ एक कीमती धरोहर है।

(३) प्रश्न–ज्योतिष

आपके जीवन में पग-पग पर निर्माण होनेवाले नौकरी, बढ़ती, तबादला, विवाह, संतति, गुप्तधन, अचानक-धनलाभ, परदेश-गमन, कीर्ति, शत्रु-नाश, कोर्ट-कचहरियों के मामले इत्यादि जैसे अनेक प्रश्नों का सही हल, आप इस ग्रंथ में पाएँगे। पिछले कई वर्षों से इसी पद्धति से लेखकने अनेक लोगों के प्रश्न हल किये हैं और कई लोगों को राहत पहुँचा कर उनकी शुभ-कामनाएँ प्राप्त की हैं। आप स्वयं इस पुस्तक के सहारे अपने चकराने वाले प्रश्नों-समस्याओं को सुलझा सकेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) मनकी अगाध शक्ति और स्वयं सूचना :

हमारे मनकी शक्ति अगाध है। एकवार अगर आप उसे जाग्रत कर दें तो सारी दुनियापर विजय प्राप्त कर सकते हैं। उसकी पूरी जानकारी इस ग्रंथ में पढिए। मंत्र-तंत्र, वशीकरण, भ्रम, भुलावे में डालने का डोरा तावीज़ को मोहने की रीत, आदि के संबंध की पूरी जानकारी, इस ग्रंथ में दी गयी है।

प्रत्येक मनुष्य मनकी सूचना का सेवक है। किन्तु इस ग्रंथ की सहायतासे आप उसे पलट दे कर अपनी दासी वना ले सकते हैं और मनकी सूचनाको, स्वयंसूचना में परिवर्तित कर सकते हैं।

(५) मोहिनी विद्या : साधना और सिद्धि :

इस ग्रंथ में, हमारी संकल्प-शक्ति को प्रबल बनाने की अनेक गुप्त साधनाएँ, प्राणायाम, मानस-पूजा इत्यादि के वारेमें सविस्तर जानकारी दी गयी है। उसका अध्ययन करके, आप अद्‌भुत सिद्धियाँ हाँसिल कर सकते हैं।

मोहिनी विद्या एक गूढ शास्त्र है। उसकी सिद्धि-द्वारा आप एकाध व्यक्तिको ही नहीं, बल्कि पूरे विश्वको, अपना गुलाम बना सकते हैं। गुरु-कृपा से प्राप्त अनेक अत्यंत गुप्त-साधनाओंको, उन्हींकी आज्ञापर, इस ग्रंथ में प्रथमतः दिया गया है।

(६) संसारी व्यक्तियोंको, समाज में किस प्रकार का बरताव रखना चाहिए।

संसार में, समाज में किस प्रकारकी सावधानी बरती जाय, व्यसन, पति-पत्नी संघर्ष, अपनी संतानों के साथ का बरताव, वृद्धावस्था, इत्यादि अनेक सांसारिक एवं सामाजिक समस्याओंका हल, इस ग्रंथ की विशेषता है।

लेखक को पिछले ४०।५० वर्षों में जो अनुभव प्राप्त हुए, उनके आधारपर किये गये इस ग्रंथ के मार्गदर्शन से, अनेकों व्यक्तियोंका जीवन सुखी-संतोषी बना है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(७) आपका जीवन सुखी बनानेवाले व्रत, उपासना ओर उपचार

इस ग्रंथ में दिये गये व्रत उपासना और उपचार स्वानुभववाले हैं। कुछ व्रत दूसरों को बताये गये और उन्हें मी उनकी अच्छी फलश्रुति प्राप्त हुई। व्रत, उपासना व उपचारों का ज्ञान, गुरु-मुख से प्राप्त होने क कारण, इस ग्रथ को एक अनोखा स्वरूप और निरालाही स्थान मिला है।

(८) दैवी उपासना और फलश्रुति :

इस ग्रंथमें, श्रीशंकर भगवान, श्री गणेशजी, श्री दत्तात्रेय, श्री हनुमानजी, श्री गायत्रीदेवी, सूर्योपासना, इत्यादि की पूजा-विधि एवं नवनाथ पूजा, चक्रपूजा का संपूर्ण वर्णन दिया गया है तथा उनकी फलश्रुति बतायी गयी है। यह एक संग्रहणीय ग्रंथ है।

(९) धन-प्राप्ति के लिए प्रभावी व्रत और उपासना :

आजके इस कठिन समय में, धन का महत्त्व सब महसूस करते हैं। धन-प्राप्ति के हेतु, गुरु-मुखसे मिलीं अनेक गुप्त और दुर्लभ साधनाओं को, इस पुस्तक में दिया गया है।

नाथपंथीय इन गुप्त टोटकों की साधना से, हजारों लोगोंने लाभ उठाया है।

(१०) शाबरी मंत्र का प्रभाव :

इस पुस्तक में, नवनाथ संप्रदाय-द्वारा प्रणित शाबरी मंत्र, और उसके प्रभावसे अनेकों मुसीबतों, वेदनाओं और अडचनों को दूर करनेके उपाय बताये गये हैं। इसमें शाबरी कवच और उसका प्रभाव, हमारे जीवनको, किस प्रकार सुखी बनाता है, यह समझाया गया है।

(११) आज का दिन किस प्रकार बीतेगा ?

प्रत्येक मनुष्य के जीवनपर हररोज छह ग्रहों का प्रभाव पड़ता है। ये सारे ग्रह उस दिनपर अपना परिणाम बताते हैं। पिछले ३ वर्षों के इस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh